

1

नरिष्ये ज्यान्वेसि वे आं तु ॥ तो ना ग व त्ति वा ना ग व ता र्थु ॥ वो
 व्यां आ तु वो ल वि सि ॥ ही ते मा ड्रे म रु ष्टे अ रि ख व का ल ॥ स मु
 रु नि के ले सं खे ल ॥ ते थि यो प्रि मा वि जे वो ल ॥ जा ए ति के व
 ल गुरु रु त्त ॥ ज्या सि ना हि या च रणे न ति ॥ या सि के स्त
 नि हो यि ल वि र की ॥ ज हि प ति ल श्च ति स्मृ ति ॥ रा स्र चि स
 वि के ल्यां हि ॥ करि ता सा ध ना यो को चि ॥ सा ध नि स मा
 धा न नु रि ॥ जा लि यां स मु रु ल पा द शि ॥ ब्र ह्म त्वं पु शि गुरु त्त
 कां ॥ तो स मु रु ज ना र्द न ग स क ल ज ग त्वे ङा धि ष्टा न ॥
 पु तिं पु ता सा तुं आ प ए ॥ स ह जं वि ज्ञा ए स म सा म्यं ॥

②

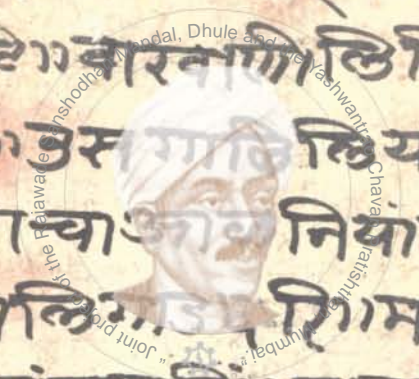
समसाध्यसर्वकृतिः ॥ ज्यासिचडेसद्गुरुमक्तिः ॥ तो विर्ये श्रीसां हो
मागवतिं अर्थ प्राप्तिप्रतिष्ठं ॥ ११ ॥ जालियां सद्गुरुसकृपाव
ष्ट ॥ न करितां विसतिवेकष्ट ॥ नागवतार्थि होये प्रविष्ट ॥ क
वेसुमटभावाधि ॥ १२ ॥ हृदयीं जालियासद्गुरो ॥ कावेप्र
केटे देवादिदेवो ॥ तेथे मागवतान्वा आम्नि अं ॥ किं प्रावो ॥ स
हज विपाहोवसावे ॥ १३ ॥ मागवतगिरितां सद्गुरुमक्तिः ॥ प्रा
सहोयिजे मागवतार्थि ॥ तेथे काव्यादिविसति ॥ नाना यक्ति
किमर्थी ॥ १४ ॥ किमर्थं करवेंशास्त्रज्ञान ॥ किमर्थं धरवें वृ
थ्या ध्यान ॥ चालते बोलते ब्रह्म ज्ञान ॥ सद्गुरुचरणसाधकां

११९५०१

२

2A

वांचुनियां गुरुभजनशिष्यासिनेहसमाधान॥ साहुनियान्त्रे
 कसाधन॥ नाहिजाणसर्विया॥ मद्यसासुसुसुपापरिपाळिं॥
 येकादशापुकीर्धकोटि॥ वारवाणि॥ लिजिमहादि॥ यथार्थ
 दक्षिनिजबोधं॥ १७॥ पुसगाति॥ लियांरसुहोया॥ तोवेवि
 तांबहुकाळनराहे॥ साचा॥ आर॥ नियांपाहे॥ मुळहोयस
 पिंड॥ १८॥ तोवेचितालि॥ १९॥ रि॥ मगसाकर॥ जिजेराये
 पुरि॥ तेहिघोटुनियांचतुरिं॥ नाबदकरिकोरडि॥ २०॥
 तैसेहें श्रीकागचतजाणामुलिबेलिळाश्रीनारायण॥
 तेंचव्यासिंआ॥ पणदशालकावर्णिलिं॥ २१॥ तेंइशालइका



3

पर्वडि। श्रीशुकमुखेचदलिगेडि॥ तेथिकविंणायबंधमोडि॥ वि
 कावोरवडि श्रीधरि॥ २१॥ ते श्रीधरेचंनिज व्याख्यान॥ चावार्थेदिपि
 काजाण॥ साकावार्थविस्तद्रावरवुण॥ केलेनिरोपणदेशपाषा
 ॥ २२॥ मुळिवकाश्रीनारायणव्याख्यानशुकश्रीधरव्याख्यान॥ यां
 उमुळिचेलकुनिगेडपण॥ यकाजनादनकविकर्ता॥ २३॥ मुळि
 विजश्रीनारोयण॥ ब्रह्म्यांवेद्यार्थेपेलिंजाण॥ तेनारदक्षेत्रिसं
 पुर्ण॥ पिकपरिपुर्णनिडारेलं॥ याचं व्यासं दृशालक्षणा॥ संपुर्ण
 केलिसाचवण॥ शुकंपरिक्षितिव्याखळांजाण॥ मळनिनिजकृण
 कादिले॥ २४॥ ते शास्त्रार्थेनाण॥ श्रीधरेनिजबुधिपारवडुन॥ कादि
 लेनिडारोचं कृण॥ आतिसचणसुचं क॥ २५॥ अथर्विंपकानेचोरवडि



3A
 मरुटियापद मोडि ॥ येका जनार्दन के लि परवडि ॥ तेजाण
 तिगेडि निजात्म श्रोते ॥ २७ ॥ यां श्रोतयां वेनि आवधाने ॥ ज
 नार्दन कृपा सावधाने ॥ पुर्व धिये का जनार्दने ॥ संपुर्ण कर
 णे देवाकाषा ॥ २८ ॥ तेथे प्रथमाध्याइ अनुक्रम ॥ वैराग्य उत्प
 तिचा संक्रम ॥ कुळक्षयासि पुत्रकोचमा ॥ करि उपक्रम ब्रह्
 म्यापे ॥ २९ ॥ दुसऱ्यापासुनि वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ नारद वसुदेवाचां
 द्यहि ॥ निमिजायंत प्र श्रोतारि ॥ चथाइं स्वरिसंपविलि ॥
 ॥ ३० ॥ षष्ठमाध्याइं कृष्णमुति ॥ पाहें आळिया सुरवरपंक्तिः
 तिं हि प्रार्थि लाश्रीपति ॥ निज धामाप्रतिया विया ॥ ३१ ॥ ग्दे
 को नि सुरव रं विविनति ॥ देखे नि आरिष्ट कु तद्वारावति ॥

(4)

उद्धवेप्रार्थिताश्रीपति॥ निजधामप्रतिमजनेयिं॥ ३२॥ याद्विप्रश्नाचेप्रज्ञात
 २॥ यागयुक्ताननगंफिरा॥ ससमाध्याइंसारंगधरा॥ थोडेनिफारबोलिला
 ॥ ३३॥ तेथयागसंग्रहलक्षणा॥ येदुअवधुनसंवादेजाण॥ चोवितांगु
 नंवेप्रकर्णीकेलेसंपुर्णनिवमाध्याइं॥ अद्रासंग्रहज्ज्ञानविश्वासु॥
 तेथेनानामताचामत्तनिरासु॥ दशमाध्याइंदृषीकेसु॥ ज्ञानविलासुबो
 लिला॥ ३४॥ अकरंवेआध्याइंजाण॥ बद्ध॥ मुक्ताचेवैलक्षण॥ सांगेनिसा
 धुचेंगुपा॥ मत्कीचेसंपुर्णदिवि॥ ३५॥ कागवतिंबारावाअध्यावो॥
 आतिगुप्तेबोलिलादेवो॥ गतेथिल्लविलआफिप्रावो॥ पडेसंदेहो
 सज्ञाना॥ ३६॥ बारांयांआध्यायाविकिळि॥ युक्तिप्रसक्तिनाडुडेबो
 लि॥ जनार्दनकुंभपाळमाउळिगतेरोमागीदाविलिगंथा॥ ३७॥ साहा



✓

4A

99
१६३

दशाध्याइ निरोपण ॥ ससंगा चामहिमा गहन ॥ कमचाकतीकोण ॥
 या गितें लक्षण कमचिं ॥ १ ॥ तोडा दशाध्यावो अइक तां ॥ इनान सबुज्जहो
 येविता ॥ आउगके विषया वरुण गते बाधकता साधकां ॥ २ ॥ गुणवैक्य
 म्याये जें लक्षण गते एो विषया वरुण गहन गते ये सव पुद्रियं कारण ॥
 केले निरोपण त्रयोदसि ॥ ३ ॥ गते निप्रसंगिये थो विता गित विषयां वे
 जेय थिता ॥ उगवावया हे सां गित सुनिश्चित सांगित लक्षण ॥ ४ ॥ हंस
 गिते चं निरोपिले ॥ इनान ॥ सम ॥ चयं तिसमाधान ॥ गते विसाधावया
 साधन ॥ भौदां वां आपणको लिलु देवो ॥ ५ ॥ साधना माझि मुरवे मकिः
 सगुणते निनिर्गुण माझि मुति ॥ वोगय कध्या न स्थिति ॥ बो लिला श्री
 पति चतुर्दशि ॥ ६ ॥ विविधारि द्विंधि धारण ॥ र्छो चि ॥ देवे सांगिं

8

उ

तल्लिं॥ इवाप्रति॥ सिद्धि बाधकां माप्ते प्राप्ति॥ हे पंधरां व्यां अंति निरोपिले॥
 ॥१६॥ यवं पंधरा विया अध्याइं पुर्वा र्ध॥ निरोपणाले अति शुद्ध॥ आ
 तां उचलले उत्तरार्ध॥ तो कथासंध आ वधारा॥ ॥१७॥ षोडशिमगवद्धि श्रुति॥
 सतरा अचरा अध्या प्रति॥ वर्णी अ म कर्म गति॥ विधान स्ति ति निरोपण॥
 ॥१७॥ ये कोण सांगे अध्याइं ग ह का नान निर्णयि वें महि मानु॥ उइ वा
 चे यमादि प्र ष्ण॥ सांगि तले ज्ञान पावे॥ ॥१८॥ सा ज्ञानाधिकार वें यो
 ग॥ अज्ञात ग्य मध्य स्थ भाग॥ विस्तार वे आध्याइं श्री रंग॥ त्रिविध विता
 ग वे लिला॥ ॥१९॥ तेथ गुण दो शा वि आव स्थ॥ उइ वें चे विलि वेदां
 लें माथां॥ ते वेद वेद वाद संस्था॥ केलि तत्त्व वा ये क वि सां वां॥ ॥२०॥ ते वे
 द वाद वि शै सति॥ तत्त्वां वि संख्या कृति॥ ते तत्त्व संख्या उपपत्ति॥ केलि

वे

६

SA

११
१६१

श्रीपतिथशान्वये ॥१॥ सकळ तत्वांचे विवेचन ॥ प्रकृतिपुरुषांचे लक्षण ॥ ज
न्ममरणाने प्रकरण ॥ केलें निरोपण बाविसांवां ॥२॥ सां हो नियां परापराद्य ॥
स्वये रां हो वें निदं ॥ हा फिस्तु गित संवाद ॥ केळा विषद ते विसांवां ॥३॥
अद्वैति राहा वा स्थास्ति ॥ चो विसा वा सां रव्या विष्ट ॥ प्रति ॥ निगुणा पासुनि
गुणा सति ॥ गुणक्षये अंति निगुण उर ॥४॥ आदिनिगुण अंति
निगुणः मध्ये मासले निथ्या गुणा ॥ आदिव प्राप्ति लगी ॥ जाण ॥
केलें निरोपण सांख्याचें ॥५॥ ते निथ्या गुणा प्रकृतियुक्त ॥ त्रिगुण
गुणा चास निपात ॥ बोलिळा पंचविंशतियां अंत ॥ निगुणोक्त निज
निष्टा ॥६॥ सविसा व्या आध्याया प्रति ॥ आनिवार अनुता पात्रि
शक्ति ॥ मो गितां उर्वे त्रिकाम प्राप्ति पावला विरक्ति पुरि रवा ॥७॥

6

सजनक्रियमुर्तिलक्षणावेदिकितांत्रिकिमिश्रजन॥याउद्रवप्र
श्नाचंनिरोपरा॥वेलेपुणसिताविसांवां॥६॥माहायोग्याचंयोग
कांडार॥परमज्ञानेज्ञानगंफिर॥निजसुखाचंसुखसार॥केवळ
विनात्रजावाविसांवां॥१॥याविअध्यामाजिजाणसंसारअसंफा
वावाप्रश्न॥उद्रवेकेलाआतिगहन॥ग्यचेहिंप्रतिवचनविधिलेदे
वे॥६॥येकादषावाचानिउकलसु॥मक्तिप्रेमावाआतिविळासु॥येकुण
तिसांवांसुरसरसु॥ज्ञानेउपेसु॥क्तिक॥६१॥पुदिळादांआध्या
यांत॥स्त्रिपुत्रांकुलावाघात॥होताउंउलिनाज्ञानसमर्थगितंप्रतक्ष
कुतहारिदावि॥६२॥ब्राम्हणाचाशापकविया॥शापेवाधिलश्रीकृष्ण॥
इतरानिक्थाकोण॥कुळनिर्दळयाब्राम्हणाशापे॥६३॥ब्राम्हणाचा

६

6A

कोपुसमर्थीसकलसमुद्रकेलामुक्त ॥ शिवावाजालालिंगपात ॥ ब्रह्माक्षो
 भतनिमित्रार्थे ॥ ६८ ॥ यालागिसनानआथवासुग्ध ॥ तिंहिनकरा
 वाब्रह्मविरोध ॥ हेतुदावावयामुकुंद ॥ कुलक्षयप्रसिद्धदाखवि ॥
 ॥ ६९ ॥ निजदेहासिजोकरिवा ॥ तोकराव्याधकेलामुक्त ॥ तेषवरिज्ञा
 तादेहावैरि ॥ तित ॥ क्षमायुक्तोसज्ञान ॥ ६९ ॥ येकुरातिसआध्यायप
 र्थीत ॥ कृष्णंउपदेसिलानामुक्तपुटिलादेहिंआध्यायांत ॥ स्वयं
 दावितविदेहर्त्त ॥ ६७ ॥ रामुअयाध्यायिउनिगला ॥ कृष्णंनिजदे
 होहिआंडिलायेणंदेहासिमानुमिथ्याकेला ॥ तरायामुटिला
 मुमुक्षां ॥ ६८ ॥ पधराआध्यायपुर्वार्थी ॥ व्याख्यानजालेंसिद्ध ॥ सुत्र
 प्रायेउत्तरार्थी ॥ दाविलेंविषदअध्यायार्थी ॥ ६९ ॥ साद्येसद्गुरुजनार्द
 न ॥ श्रोतांद्यावेंसावधान ॥ पुटिलउत्तरार्थव्याख्यान ॥ येकाजना

११

वचन ॥ उद्भवे प्रश्नमाडिका ॥ ७ ॥ उद्भवमृषे कृष्णनाया ॥ विनति अव
 धारिं समथ ॥ तु स्या विष्णु तिसमस्ता ॥ नज तत्वतासां गाव्या ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 उद्भ उवाच ॥ एवं ब्रह्म परमं साक्षात् नारदा द्यंतमपाच तं ॥ सर्वेषामपि भावा
 नां वा एवास्थित्यप्येयो यो ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 तु मे निजन्मस्थितिनिधान ॥ इदं कुरु निजकृती ज्ञाया ॥ ब्रह्मपरि
 पुर्णं च यावतामि ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 रिजाया ॥ ते प्रकृति हि तु जकारि न ॥ तु मे निबळं ए प्रकृति ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 लागी प्रकृति ते परतंत्र ॥ तुं परमात्मा स्वतंत्र ॥ आनादि अव्ययो आपा
 रा ॥ श्रुतिं सिपारन कृते ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 गानिरावरया ॥ जिवावे स्वसुपुंजापया ॥ परिजिव परा तुं वै नाहि ॥ ७ ॥ ७ ॥



④

जिउतिहुकाआमान्युक्तुं शाननानातितनिश्चित॥ यालगिब्रमुते
साक्षांत॥ अविनाशवंतअमरोक्ष॥ २॥ तोउं षण परोक्षैसा मूंणसि॥
सर्वं सर्वत्रसबाह्येआससि॥ देसाआसोनियांअतक्येहोसिह
षिकेवितेंआइक॥ ३॥ श्लोक॥ ॥ उच्चावचेषुभुतेषुदुर्जेय
मक्तसजिउपासेतेहांनगवसुभातयेनब्राम्हण॥ २॥ टिका॥ म
ष्यकादिहिरुण्येगर्नपर्येतिगतसुखादिसर्वभुतिंसतं तगदैसियातु
तेनिश्चित॥ ब्राम्हणजाणतवेदवि॥ ३॥ आकृष्टुनिउपनिशेदार्थ॥
उसावां३यिंमज्जनयुक्तुं गतेतुजसर्वगतोतंजाणातगसुनिश्चित
सर्वीसा॥ ४॥ ह्यासकाम्याचेपाहतांपार॥ अविद्यानंतअश्चर्यथ
२॥ ह्यातुजनेणतिप्राकृतनह॥ आडुकविवारतयांवा॥ ५॥ हिजेमना ना

८१७

8A

99
१६१

चेविकले ॥ उपस्थाचे आंखिले ॥ जेरसनेचे पोसणे जाले ॥ निद्रेनें केले घ
रजां वायि ॥ ८७ ॥ ह्यांसिख तसिघ स्वरुप पांही सर्व गत नयेडे विवायि ॥
निजात्मतान केले कोहि ॥ सदा विषयिं गुळले ॥ ८८ ॥ विषयिं चैळ अंतः ॥ च
करण ॥ ह्यासिन के ध्यान सुगुण ॥ निरुणो प्रचेवो नामन ॥ आझा
नजन के वितरति ॥ ८९ ॥ न कने नाना विसृति ॥ ह्यांसां संगं मंजं
प्रतिः न धरितां ध्यान स्थिति ॥ उक्तमा ज्या विकृतिः सा सांगम
प्रतिपज नासि ॥ ९० ॥ श्लोक ॥ ॥ ये बुयेषु चक्रावेषु मक्तातां प
रिमर्षयः ॥ उपासिनाः प्रपद्यंते संसिद्धि तद्दः समे ॥ ९१ ॥ टिका ॥
ज्या ज्या लु स्या विकृति ॥ पुर्वि उपासिल्या संति ॥ दृढभावे करुनि नति ॥
उसे स्वरुप प्राप्ति पावले ॥ ९२ ॥ ह्या स झल लु स्या विकृति ॥ कवरा स्थिति

9
स

कषणव्यक्ति ॥ कवपामाकोकवपामति ॥ हे निश्चितिमज्जसांगा ॥ १२ ॥ मूपा
सिकलश्रुतांप्रति ॥ तुं विवोळखमास्याविक्रुति ॥ तेरिते तुझिअत क्यस्कि
ति ॥ नकळेत्रीपतिआमनेनि ॥ १३ ॥ श्लोका गुढस्वरसिमुतसाश्रुतानां
श्रुतभावना ॥ नवापयतिश्रुतानियस्यंत मोहिवानिते ॥ ४ ॥ टिका ॥ स
र्वश्रुतांचाहृदयस्वरुहृदयिअकोनिअतिगुप्त ॥ याउतेंश्रुतेंसमस्त ॥
ने हखत देहभ्रमे ॥ १४ ॥ याचिहं प्रमासिदेवराया ॥ तुळकारणतु
झिमाया ॥ तेथतुझिद्वयाजाडिअ ॥ मायाजायेलयगुणें ॥ १५ ॥ म
गसंकीचाइं ॥ सर्वश्रुतिं सबाह्यवेहिं ॥ तुझेस्वरुपवां ऽयिं वांयिं ॥ प्र
कृतेपाहिंसदोदित ॥ १६ ॥ येकडे तुझेरुपेचेकुरणें ॥ तेद्वपाहिजे
कवपोंगुणें ॥ या ॥ अगितुस्याविक्रुतिउपासणें ॥ तुझेरुपेकारण

॥ गोविदां ॥ १७ ॥

15

य

प्रताप महानगरवाडिवन्त्रगपटियंताजरा ॥ १ ॥ जिवप्राणजोमज्ञा ॥ २ ॥
 ज्याचेरथिचेमिधुरेवलि ॥ ज्याचेअश्वचेमिवागारेधरि ॥ जोउपदेवि
 लाकुरक्षेत्रि ॥ उभवे सौ न्यामासारिरणागणी ॥ ३ ॥ तोनरकावता
 रअर्जुना ॥ त्याच्याहातुसारिसाप्रश्ना ॥ जैसेउद्रवासिसंतोशोनका
 ये श्रीकृष्णबोलिलीला ॥ ४ ॥ श्रीमगवानुवाचि ॥ एव
 मेतदहं वृष्टः प्रश्नं प्रश्नं विना ॥ युंयुस्तु नविनसनेसपत्नी
 रर्जुनेनवै ॥ हीटिका ॥ हाविप्रश्नमजकारणं ॥ पुर्विपुसिळाज
 र्जुने ॥ जेकांतिष्करनिदुर्योधिन ॥ युद्धसत्राणं माडिलें ॥ ५ ॥
 श्रीरनिदीलाणप्रतापपुरी ॥ धिरविरकाणिसज्जान ॥ प्रश्नकूसामि



10A

त्रिचक्षुः ॥ माता अमा जाण अर्जुन ॥ ६ ॥ तेषं अर्जुनें कुरुक्षेत्रिं ॥ युद्धसम
यिं माहा मारि ॥ स्वजन वधाचं मये भारि ॥ हावि प्रश्न करि मज्जते कां ॥ ७ ॥
श्लोक ॥ ज्ञात्वा ज्ञातिवधं गत्ये मर्धमे गज्ये हेतुं ॥ ततो निवृत्तो
हं स्याहौ हं हताय मितिलोकि ॥ ८ ॥ तदा पुरा षव्या ध्रुवु कामि प्रतिवा
धि ता ॥ अन्या जा संते मा मेवं यथा तं सुद्विनि ॥ ९ ॥ टिका ॥ केवल राज्य
लोका कारणं ॥ गुरु गोत्र पित्र्य वयसं ॥ हं अति निंद्य मज्ज कारणं ॥
नाहिं जुं सणें प्राणेतं ॥ १० ॥ लोकि क्रुध मे प्रवृत्ति ॥ मि मारि तां हे मर
ति ॥ अरे सिमहा मोहा विभ्रांति ॥ उपज्जत्ति वितिं अर्जुना ॥ ११ ॥ राज
को गा चें धल निवमी ॥ जाति वधाचं निदय क्रुमी ॥ हा केवल मज्ज अधमी

११
१६७

(11)

धर्माचा स्वधर्म बुडविला ॥ ११० ॥ ज्याचे तिर्थे घ्यावे प्रतिदिनि ॥ जे पुजावे
वरासनि ॥ ते रवांचु निति रवटांबाणा ॥ कोणाविअ वनि स्वगेत्र रुधिरें
॥ १११ ॥ ज्यांचे करंवे अथातपीरा ॥ त्यांचे हृदयि फेदाचे बाळा ॥ झले
पुर्वज जाले उतिपा ॥ आळिनाग वरा निजधर्मी ॥ ११२ ॥ असे निअ
नु तोपें जाणा ॥ साडुनियां धनुष्यावा ॥ शोका कुलित अर्जुना ॥ मून
वदन रण रंगी ॥ ११३ ॥ ते काळि त्यांचे जाणा ॥ तो महा विरपंचानना ॥
नाना युक्तिं केलें समाधान ॥ ते हिल क्षणा आवधारि ॥ ११४ ॥ अर्जुना
देहोति रुकानेश्वर ॥ मख मुत्राचें कोबार ॥ करिता नाना उपचार ॥
मरणात त्पर क्षणिक ॥ ११५ ॥ जिउनि जामिये निर्मल ॥ अजु अव्य

१११



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com